| Volume 7 | Issue 1 | SEP. 2024

MAKTABAH JAFARIYAH Knowledge & Research Academy

The International Journal

ISSN 2581-4354

"कबीर की बानी में सूफी दर्शन"

डॉ. शब्बीरअली जी. भट्ट (आचार्य)

मदीनतुल इल्म आर्ट्स एन्ड कोमर्स कोलेज, किशोरगढ़

संक्षेप:

पंद्रहवीं सदी के एक सूफ़ी शाइ'र और संत जिन्हें कबीरदास या भगत कबीर के नाम से भी जाना जाता है, कबीर अपने दोहे की वजह से काफ़ी मशहूर हैं, उनको हिन्दू और मुसलमान बड़ी श्रद्धा से चाहते है और उनके दोहे से ज्ञान प्राप्ति करते है | उन्हें भक्ति तहरीक का सबसे बड़ा शाइ'र होने का ए'ज़ाज़ हासिल है | कई सूफी शायर या कव्वाल उनके कलाम पढकर सुनाते है | उनके दोहे जीवन की हकीकत को गहराई से प्रस्तुत करते है | कई लोग तो कबीर को सूफी संत ही मानते है तो स्वाभाविक ही है की उनकी बानीमें सूफी दर्शन जरुर ही दिखाई देगा | कबीर की बानी सीधी सादी है किंतु उपदेश बहुत गहरा है | उनके दुहे जैसे की गागर में सागर समाया हुआ है | उनके उपदेश की गूंज हिन्दुस्तान तक सिमित न रहकर पूरी दुनियामे गुज उठी है | कबीर सहाब सूफी रंग में रंगे हुए थे | वो कहते है की इन्सान ख्वाहिशोसे गीरा हुआ है | वह ख्वाइशोका गुलाम है | यदि ख्वाहिश न रहे तो इन्सान सभी चिंताओ और तनावों से मुक्त हो जायेगा और व शहंशाह बन जायेगा | वह कहते है की- "चाह गई चिंता गई, मनवा बेपरवाह | जिसको कुछ न चाहिये वह शहनशाह ||" कबीर साहब हमे इक मालिक को मानने और किसी को न मानने का कहते है | वह कहते है की पूरी सृष्टि का सर्जक इक और अजोड है वो दो या जादा नहीं है | वह कहते है की - " साहेब मेरा एक है, दूजा कहा न जय | जो साहेब दूजा कहे वो दूजा कुलका होय || " यानी सूफी ओ के एक मालिक या एक सर्जक को मानने के लिए कबीर जी कहते है | इसी तरह कई और सूफी दर्शन के उपदेश को कबीर की बानी में किस तरह उजागर होते है समजने की कोशिश की गई है | | इस संशोधन पत्र में कबीर एक सूफी है और उनकी बानी में सूफी दर्शन दिखाई देता है उसके बारेमे लिखने की कोशिश की गई है |

प्रस्तावना :

कबीर की साधना पद्धति पर सूफी प्रभाव रहा है। कई सूफी सिलसिले और कव्वाली जैसे सूफी संगीत में कबीर के दुहे पढ़े जाते है | सूफियों ने 'आशुक माशूक' की बात की है। कबीर की जीवात्मा भी उस प्रिय के लिए तड़पती है। हर क्षण मिलन की व्याकुलता देखकर लगता है कि कबीर की यह वियोग साधना सूफियों के प्रभाव के कारण ही है। कबीर के दुहेमें सूफी सिद्धांत प्रगट होते है जैसे के उनका नाम, परिवार, एकेश्वरवाद, गुरु-पीर का महत्व जैसे कई पहलु का हम इस संशोधन पत्र के माध्यम से अभ्यास करेगे |

कबीर की बानी में सूफी दर्शन :

कोई इन्सान की पहचन उसकी जबान है, जो हमारी बानी में सच्चाई है तो हम सही राह पर है | कोई सूफी संत तभी सूफी संत बनता है जब वह ऐसी बानी बोले जिससे अपने मन और दुसरो के मन को शीतल करे | जिस में दुसरो के प्रति प्रेम प्रगटे, दुसरे का भला हो ऐसी बानी हमे बोलनी चाहिए | इस के बारेमे कबीर जी कहते है -

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय |

औरन को सीतल करे, आपहु सीतल होय ||

(कबीर पाठ: संत विवेकदास, कबीर वाळी प्रकाशन केन्द्र कबीर चौरा मठ, मूलगादी, कबीरचौरा, वाराणसी, पृ. २४, करवरी २००९)

कबीर नाम खुदा के निन्यानवे नामोमें से एक नाम है और उसकी एक सिफत यानि के एक गुण है| जिसका अर्थ होता है 'बहुत ही बड़ा' नाम में ही खुदा की जो सिफत रखता है| वो अपने जीवन में, अपने किरदारमें क्यू कर खुदा की जलक न रखता होगा |

काशी के इस निडर एवं सूफीसंत कवि का जन्म लहरतारा के पास सन् १३९८ में ज्येष्ठ पूर्णिमा को हुआ। जुलाहा परिवार में हुआ था | माता नीमा और पिता नीरू थे | कई लोग उन्हें तालाब से मिले थे एसा मानते है लेकिन यह सच नहीं है ये सब दंत कथाए है | उनके बेटे का नाम कमाल और बेटी का नाम कमाली था | | कमाल को एक दुहे में नसीहत करते हुए कहते है की –

कहे कबीर कमाल से, दो बातें सिख ले ।

कर साहिब की बंदगी, भूखे को अन्न दे।।

(https://www.bhajandiary.com/man-lago-mero-yaar-fakiri-mein-lyrics-in-hindi/)

जैसे हर सूफी खुदा को खोजने के लिए जो सबसे पहला काम करता है वो होता है गुरु या पीर की खोज कबीर ने सूफीसंत रामानंद को अपना गुरु स्वीकार किया और गुरु महिमा गाने लगे | जैसे दुसरे सुफिओने गाया है | सुल्तान बाहू कहते है के -

"मुर्शिद मैनूँ हज्ज मक्के दा रहमत दा दरवाज़ा हू

कराँ तवाफ़ दुआले क़िबले हज्ज होवे नित्त ताज़ा हू

कुन-फ़-यकून जदोका सुणया, डिट्ठा ओह दरवाज़ा हू

मुर्शिद सदा हयाती वाला ओह ख़िज़र ते ख़्वाजा हू"

(https://sufinama.org/kalaam/hazrat-sultan-bahu-kalaam-50)

सुल्तान बाहू कहते है की मेरा मुर्शिद मक्के के हज्ज जैसा है वो मेरे लिए अल्लाह की रहमत का दरवाजा है में उनका तवाफ़ करता और मेरा हज्ज नित्त ताज़ा रखता हु | जबसे मेने कुन फ यकून मुर्शिद से सुना है तबसे मेने वो दरवाजा देखा है यानी उनकी दुआ से मेरी हर मुश्किल आसन हो जाती है | मेरा मुर्शिद सदा के लिए हयात वाला है जैसे के ख्वाजा खिज्र | मेरा मुर्शिद ही ख्वाजा खिज्र है जिस को कभी मौत नहीं आती |

ऐसे ही कबीर जी अपनी बानी में गुरु महिमा बताते हुए कहते है के-

"सतगुरु साचा सुरिवा, ताते लोहिं लुहार |

कसणी दे कंचन किया, ताई लिया ततसार ||"

(https://bharatdiscovery.org/india/)

"गुरु बिन ज्ञान न उपजै, गुरु बिन मिलै न मोष।

गुरु बिन लखै न सत्य को, गुरु बिन मैटैं न दोष।।"

(https://satyaloy.wordpress.com/2016/02/14/)

कबीर सहाब कहते है की मेरे गुरु लुहार के समान है जैसे लुहार हथोडा मरके सही आकार देता है उसी तरह मेरे गुरुने कसनी यानी कसोटी देके मुझे

कंचन (सोने) के समान बना दिया तब उन्होंने मुझे छोड़ा है |

दुसरे दुहे में कबीर साहब कहते है की गुरु बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता और गुरु बिना जीबन का रहस्य समज नहीं आता गुरु बिना हमारे जो संदेह या संशय है वो मिटते नहीं है उसकी गवाही तो वेद और कुरआन भी देता है |

कबीर जी सूफी दरवेशो की तरह एक जगह से दूसरी जगह गुमने लगे । उनके मिज़ाज में बेपरवाही दिखाई देती है | कबीर सधुक्कड़ी भाषा में किसी भी सम्प्रदाय और रूढ़ियों की परवाह किये बिना खरी बात कहते थे। कबीर ने हिंदू-मुसलमान सभी समाज में व्याप्त रूढ़िवाद तथा कट्टरपंथ का खुलकर विरोध किया। कबीर की वाणी उनके मुखर उपदेश उनकी साखी, रमैनी, बीजक, बावन-अक्षरी, उलटबासी में देखी जा सकती हैं। गुरु ग्रंथ साहब में उनके २०० पद और २५० साखियां हैं ।

अपने एक दुहे में कहते है –

“चाह मिटी, चिंता मिटी मनवा बेपरवाह ।

जिसको कुछ नहीं चाहिए वह शहनशाह॥”

(https://insanelyinsanity.wordpress.com/2017/10/01/)

“कबीर तन पंछी भया, जहां मन तहां उडी जाइ।

जो जैसी संगती कर, सो तैसा ही फल पाइ।“

(https://www.hindivarta.com/kabir-tan-panchhi-bhaya-jahaam-man-tahaam-udi-jaai/)

कबीर सहाब कहते है की जिसको कोई चाहना न हो उसे कोई चिंता नहीं होती जिस को कुछ न चाहिए वो शहनशाह की तरह हो जाता है | ऐसी ही एक बात हदीस में भी आती है की जिस की एक बी ख्वाहिश न हो तो उसकी छाव से भी शेतान भाग जाता है |

दुसरे एक दुहे में कबीर कहते हैं कि संसारी व्यक्ति का शरीर पक्षी बन गया है और जहां उसका मन होता है, शरीर उड़कर वहीं पहुँच जाता है । सच है कि जो जैसा साथ करता है, वह वैसा ही फल पाता है |

खुदा एक है और उसके जैसा कोई नही और नहीं उसकी कोई प्रतिमा है और नहीं उसकी कोई तस्वीर है और कबीर तो दो कहने पर नाराज हो जाते है |

“सोइ मेरा एक तो, और न दूजा कोये ।

जो साहिब दूजा कहे, दूजा कुल का होये ॥”

(http://podcast.hindyugm.com/2011/03/saahib-mera-ek-abida-kabeer-gulzar.html)

यानी मेरा जो मालिक और मेरा सर्जन हार है वो एक है दूजा खुदा नहीं है मेरा साहेब एक और अजोड है दूसरा नहीं है जो दूसरा साहेब या मालिक कहता है वो दुसरे कुलका होगा |

“ पाहन पूजे हरि मिले, तो मै पूजूँ पहाड़ |

तसे ये चकी भली पीस खाये संसार ॥”

(https://hi.quora.com/)

जो पथ्थर पूजने से हरि मिलते तो मै पहाड़ पूजता क्युके पथ्थर की पूजा से कुच्छ भी हासिल नहीं होता | उस पथ्थर से तो ये चक्की अच्छी जो किसे के काम आती है |

खुदा के पाने के लिए क्या करना है कबीर कहते है-

“कबिरा मन निर्मल भया, जैसे गंगा नीर

पीछे-पीछे हरि फिरैं कहत कबीर-कबीर”

(https://blog.hindwi.org/notes-on-kabir/)

कबीर सहाब हमे बता रहे है के हमारा मन निर्मल

हो जाये तो हमे खुदा को खोजने की जरूरत नही है खुदा खुद ही हमारे पीछे आये गा जैसे डॉ. अल्लामा इक़बाल कहते है के -

" खुदी को कर बुलंद इतना के, हर तकदीर से पहले /

खुदा खुद बंदे से पूछे, बोल तेरी रज़ा (इच्छा) क्या है //"

(https://avadhnama.com/)

नफस परस्ती और हक परस्ती यानी के मन की मानना और खुदा की बाते मानना| मन के बारे में कबीर जी कहते है-

"तन को जोगी सब करें, मन को बिरला कोई /

सब सिद्धि सहजे पाइए, जे मन जोगी होइ // "

(https://hindi.speakingtree.in/allslides/content-434636)

कबीर सहाब कहते है की शरीर में भगवे वस्त्र धारण करना सरल है, पर मन को योगी बनाना बिरले ही व्यक्तियों का काम है य़दि मन योगी हो जाए तो सारी सिद्धियाँ सहज ही प्राप्त हो जाती हैं | एक और दुहे में कहते है की -

" माया मुई न मन मुआ, मरी मरी गया सरीर /

आसा तृष्णा ना मुई, यों कहै दास कबीर // "

(कबीर वाणी पियूष : डॉ.ठाकुर जयदेव सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ. ८७, १९९८)

कबीर कहते हैं कि संसार में रहते हुए न माया मरती है न मन | शरीर न जाने कितनी बार मर चुका पर मनुष्य की आशा और तृष्णा कभी नहीं मरती, कबीर ऐसा कई बार कह चुके हैं /

"मन हीं मनोरथ छांड़ी दे, तेरा किया न होई /

पानी में घिव निकसे, तो रूखा खाए न कोई //"

(https://satyaloy.wordpress.com/)

मनुष्य मात्र को समझाते हुए कबीर सहाब कहते हैं कि मन की इच्छाएं छोड़ दो, उन्हें तुम अपने बलबूते पर पूर्ण नहीं कर सकते। यदि पानी से घी निकल आए, तो रूखी रोटी कोई न खाएगा । कहने का मतलब यह है की मन तो उलटी बाते भी कहता है तो उसे दूर करना चाहिए |

सूफी दर्शन में 'मार खुदी मिले खुदा' यानी अहंकार या मन को मार दो तो खुदा मिल जायेगा | वोही बात कबीर जी अपनी रचनामे कहते है-

" जब मैं था तब हरी नहीं, अब हरी है मैं नाही /

सब अँधियारा मिट गया, दीपक देखा माही // "

(https://www.hindwi.org/dohe/jab-main-tha-tab-hari-nahiin-kabir-dohe)

जब मैं अपने अहंकार में डूबा था – तब प्रभु को न देख पाता था – लेकिन जब गुरु ने ज्ञान का दीपक मेरे भीतर प्रकाशित किया तब अज्ञान का सब अन्धकार मिट गया – ज्ञान की ज्योति से अहंकार जाता रहा और ज्ञान के आलोक में प्रभु को पाया । मनुष्य को अपने भीतर से अहंकार, नफरत, द्वेष, लोभ, मोह जैसे कई खराबियो को हटाना होगा तब हमे अपने भीतर प्रभु की प्राप्ति होगी | जैसे साफ पानी में सूरज नजर आता है कभी गंदे पानी में या कीचड़ में नजर नहीं आता | उसी तरह हमे अंदरूनी तौर पर साफ होना पड़ेगा |

सूफी दर्शन में है के अमीरी से ज्यादा गरीबी में मजा है | हजरत पयगम्बर महंमद साहब के उपदेश में कहा गया है की 'गरीबी मेरा गौरव है' | वोही बात कबीर जी अपने दुहे में कहते है-

" जैसो आनंदा संत फकीर करे ।

एसो आनंदा नही आमिरि में ॥ "

***

" साईं इतना दीजिये, जा मे कुटुम समाय ।

मैं भी भूखा न रहूँ, साधु ना भूखा जाय ॥ "

(https://hindi.speakingtree.in/allslides/

content-437637)

इस तरह हमे कबीर की रचनाओ में सूफी दर्शन मिलता है | कबीर जी स्वयं एक सूफीसंत है और उनकी रचनए कव्वाली और सूफी संगीत में गायी जाती है | आजभी सूफी दरवेश कबीर की सूफी दर्शन से बहुत कुच्छ सीखते है |

निष्कर्ष :

अंतमे इतना कह सकते है की कबीर की बानी में सूफी दर्शन हर एक दुहे में भरा पड़ा है क्युके कबीर सहाब खुद एक सूफी दरविश थे | उनकी बानी से जन मानस में जाग्रति आई है और बाहिय आडम्बरो से हटके कैसे सहज ही प्रभू प्राप्ति की जा सकती है वो दिखलाया है | उनकी बानी सहज और स्वाभाविक है मगर उनकी बातो में गहराई है | कैसे सहज ही धर्म की बड़ी बाते करते थे कबीर जी | कबरी को युगों युगों तक सभी लोग यद् रखेगे | उनको हिन्दू या मुस्लिम या कोई और सभी उनके कहे दुहे पढ़ते है और मानते है | प्रभु प्राप्ति के लिए कोई बाहिय आडम्बर करने की जरुर नहीं है मगर सच्चे मन से, पूरी श्रद्धा से, सच्चे भाव से, मालिक को यद् करने की जरुर है | सच्चे सूफी भी बाह्य आडम्बर से हटके भीतर के सच्चे मनकी महिमा की है | भारतवर्षमे कबीर साहब एक सूफी संत से प्रसिद्ध है | कबीर के बारे में और भी संशोधन पत्र लिखे जा सकते है जैसे के कबीर की बानी में अंधश्रद्धा पर प्रहार | कबीर के मत अनुसार ध्यान पद्धति वगैरह विषयों पर लिख सकते है |

संदर्भ ग्रंथ :

1) 'सूफीज़म और हिन्दी साहित्य' विमलकुमार जैन, ज्ञान मंडल, बनारस प्रकाशन आवृत्ति, १९५५
2) 'सूफीमत', रामपूजन, तिवारी, साधना और साहित्य, अलीगढ़, प्र.आ.१९७८
3) 'सरल गुरु ग्रंथ साहिब' जगजितसिंह, विद्याविहार, न्यु दिल्ली, प्र.आ. २००१
4) 'सूफीमत-तसव्वुफ़' प्रो. अख्तरुल वासे, सर्जना प्रकाशन बीकानेर, प्र.आ. १९८५
5) बाबा फरीद, बलवंतसिंह आनंद, साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली, प्र.आ. १९८७
6) हिन्दी सूफी काव्य, समग्र अनुशीलन, शिवसहाय पाठक, राजकमल प्रकाशन, न्युदिल्ली, प्र.आ. १९७८
7) तसव्वुफ़ अथवा सूफीमत, चंद्रबली पांडेय, न्यु दिल्ली, १९४६
8) हिन्दी सूफीकाव्य का समग्र अनुशीलन, शिवसहाय पाठक, राजकमल प्रकाशन, न्यु दिल्ली, प्र.आ. १९७८
9) तसव्वुफ़ अथवा सूफीमत, चंद्रबली पांडेय, न्यु दिल्ली, १९४६
10) कबीर ग्रन्थावली, राम किशोर शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, प्र.आ. २००६
11) कबीर और कबीरपंथ, एफ.ई.केइ, हिन्दी अनुवाद : क्रुंळ भारती, फोरवर्ड प्रेस, नई दिल्ली, प्र.आ. २०२२
12) भारत के संत कवि महात्मा कबीर, www.bookforuyou.com
13) संत कबीर जीवन व साहित्य, www.bookforuyou.com